B.A. History Hon's, Part – I

Paper: I, Unit: – IV, Date: - 15.07.2020

Lession: चन्द्रगुप्त द्वितीय की उपलब्धियों का मूल्यांकन

चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य समुद्रगुप्त की रानी दत्ता देवी का पुत्र था। वह योग्य पिता का योग्य पुत्र था जिसको उसका पिता उत्तराधिकारी मनोनीत करना चाहता था। परन्तु उसकी अकस्मात् मृत्यु हो जाने के कारण उसका ज्येष्ठ पुत्र रामगुप्त ही गद्दी पर आसीन हुआ। रामगुप्त बहुत ही कायर और निकम्मा था। उसने शकों से पराजित होकर अपनी रानी ध्रुव देवी को संधि की कठोर शर्त के परिणामस्वरुप, शकों को समर्पित कर देना स्वीकार कर लिया था परन्तु उसका छोटा भाई चन्द्रगुप्त द्वितीय इस अपमान को सहन न कर सका। उसने ध्रुव देवी से मंत्रणा करके रामगुप्त का वध कर दिया और शकों को मार भगाया। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विवाह कर लिया। इस प्रकार कुल को कलंकित करने वाले अपने कायर भाई रामगुप्त का वध करके चन्द्रगुप्त द्वितीय 375 ई. में गद्दी पर बैठा।

यद्यपि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य को उत्तराधिकार में अपने माता-पिता का विशाल राज्य प्राप्त हुआ था, फिर भी उसने अपने साम्राज्य की सीमाओं की अभिवृद्धि करने हेतु तथा विशाल साम्राज्य की सुरक्षा और सुव्यवस्था हेतु अनेक युद्ध लड़े। वह एक वीर विजेता था। जिसने अपनी दिग्विजय के परिणामस्वरुप ही विक्रमादित्य की उपाधि धारण की थी।

अपनी विजयों के परिणामस्वरुप चन्द्रगुप्त के साम्राज्य में अत्यधिक वृद्धि हो गई थी। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तथा पूरब में बंगाल तथा आसाम से लेकर पश्चिम में पंजाब तथा बाहलिक प्रदेश तक उसका साम्राज्य विस्तृत था। गुजरात तथा सौराष्ट्र के प्रदेश उसके अधीन थे।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य प्रजावत्सल सम्राट था। उसमें योग्य शासक के समस्त गुणों का समावेश था। उसका शासन बड़ा ही उदार और प्रजाहित पर आधारित था।

शासन की समस्त शक्तियों का स्रोत स्वयं सम्राट था। वह प्रधानमंत्री, प्रधान न्यायधीश तथा प्रधान सेनापति के रुप में शासन के समस्त विभागों पर अपना कठोर नियंत्रण रखता था। वह स्वेच्छाचारी शासक था। उसकी सहायता हेतु एक मंत्रीपरिषद् की व्यवस्था थी। मंत्रियों के पद सम्भवतः पैतृक होते थे। परन्तु गुप्तकालीन सम्राट मध्यकालीन सुल्तानों की भाँति निरंकुश नहीं होते थे।

सम्राट के प्रशासकीय कार्यों में सहायता तथा परामर्श देने के लिए मंत्रीपरिषद् की व्यवस्था थी। प्रधानमंत्री को मंत्रिम कहते थे। युद्ध तथा संधि के सम्बन्ध में परामर्श देनेवाला मंत्री संधि विग्रहीक कहलाता था। वह युद्ध के समय युद्ध स्थल में सम्राट के साथ उपस्थित रहता था, तथा कभी-कभी स्वयं युद्ध में भाग लिया करता था। राजकीय लेखा-जोखा का संग्रह करने के लिए 'अक्ष पटल अधिकृत' नामक मंत्री होता था।

कई प्रान्तों में विभक्त था। वह प्रान्त 'देश' अथवा 'मुक्ति' कहलाते थे। प्रान्तीय शासकों को गोप्ता अथवा 'उपरिक' आदि विभिन्न नामों से सम्बोधित किया जाता था। अधिकांश प्रान्तों का शासन राजकुमारों के अधिकार में रहता था। प्रान्त प्रदेशों अथवा विषयों में विभक्त थे। विषय का शासक 'विषयपति' कहलाता था। प्रशासन का सबसे छोटी इकाई गाँव था जिसका शासन 'ग्रामिक' नामक अधिकारी करता था, जो सम्भवतः अवैतनिक कर्मचारी था। उसकी सहायता हेतु ग्राम पंचायत की भी व्यवस्था थी।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की गणना भारत के महानतम सफल शासकों में की जाती है। वह एक साहसी वीर तथा महान विजेता था। शकों और बाह्लीकों को पराजित करके अपने साम्राज्य की सीमाओं में वृद्धि की। मध्यप्रदेश के गणराज्यों तथा दक्षिण भारत के राज्यों को पराजित किया तथा पूर्व संघशक्ति का विनाश कर गुप्तों की प्रतिष्ठा में वृद्धि की।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य एक कुशल राजनीतिज्ञ था। उसने संबंधों द्वारा अपनी राजनीतिक स्थितियों को सुदृढ़ बनाया। उसने अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु नारी वेश धारण करके शक राजा की हत्या की तथा अपने बड़े भाई रामगुप्त की पत्नी ध्रुव देवी से मिलकर षड्यन्त्रपूर्वक रामगुप्त का वध करके सिंहासन पर अधिकार कर लिया था।

चन्द्रगुप्त एक योग्य तथा महान शासक था जिसने अपनी योग्यता द्वारा शासक को दृढ़ता प्रदान करके प्रजा को सुख प्रदान किया। फाह्यान ने उसकी शासन-व्यवस्था की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। वह बड़ा ही न्यायप्रिय था। प्रजा उसे अधिक प्रेम करते थे।

वह बड़ा ही दयालु तथा प्रजा हितकारी शासक था। उसकी जनता प्रजा सुखी थी। उसके प्रजाहितकारी शासन में ही गुप्तकाल के स्वर्णयुग की स्थापना हो सकी।

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर निष्कर्षतः चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य एक महान विजेता, उच्चकोटि का राजनीतिज्ञ तथा कुशल प्रबंधक था जिसके शासन काल में भारत का बहिर्मुखी विकास हुआ।

डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर